

संख्या : 3141/श0वि0/आ0-04-13(बजट)/2003टी0सी0

प्रेषक,

डा0 एस0एस0 सन्धू

सचिव,

उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

मेलाधिकारी,

अर्द्धकुम्भ मेला-2004

हरिद्वार, उत्तरांचल।

आवास एवं शहरी विकास अनुभाग

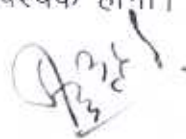
देहरादून, दिनांक 06-अगस्त, 2004

विषय : वित्तीय वर्ष 2003-04 अर्द्धकुम्भ मेला-2004 हरिद्वार की व्यवस्थाओं के अन्तर्गत बिल्केश्वर मार्ग हरिद्वार पर 100 शैय्याओं के चिकित्सालय के निर्माण हेतु स्वीकृत धनराशि के सापेक्ष अवशेष धनराशि की स्वीकृति के संबंध में।

महोदय,

उपरोक्त विषयक आपके पत्र सं0 2062/एस0टी0/मेला/सिंचाई विभाग, दिनांक: 05 जून, 2004, की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि बिल्केश्वर मार्ग हरिद्वार पर 100 शैय्याओं के चिकित्सालय के निर्माण हेतु शासनादेश संख्या-371/श0वि0-आ0-2002-13(बजट)/2002टी0सी0, दिनांक: 10 फरवरी, 2003 रु0287.95लाख की धनराशि की प्रशासकीय स्वीकृति देते हुए उक्त लागत के विपरीत शासनादेश संख्या-1756/श0वि0-आ0-2002-13(बजट)/2002, दिनांक: 01 जुलाई, 2003, द्वारा उक्त कार्य हेतु स्वीकृत धनराशि के सापेक्ष रु0 137.95 लाख की धनराशि अवमुक्त की गयी थी, को घटाते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि उक्त कार्य हेतु अवशेष रु0 150.00लाख (रु0 एक करोड़ पचास लाख मात्र) की धनराशि के व्यय की श्री राज्यपाल महोदय सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं :-

- (1) उक्त धनराशि आपके द्वारा आहरित कर सम्बन्धित कार्यदायी संस्थाओं को बैंक ड्राफ्ट अथवा चैक के माध्यम से उपलब्ध करायी जायेगी। स्वीकृत की जा रही धनराशि के आहरण से पूर्व उक्त कार्य का आगणन बन्द कर उतनी ही धनराशि का आहरण किया जायेगी, जितनी लागत पर आगणन बन्द किया जायेगा और शेष धनराशि तत्काल शासन को संदर्भित कर दी जायेगी।
- (2) उक्त धनराशि का उपयोग उन्हीं योजनाओं एवं मदों के लिये किया जायेगा जिन योजनाओं एवं मदों के लिये धनराशि स्वीकृत की गयी है। किसी भी दशा में धनराशि का व्ययावर्तन किसी अन्य योजना/मद में नहीं किया जा सकेगा।
- (4) स्वीकृत धनराशि के व्यय अथवा निर्माण करने से पूर्व सभी योजनाओं/कार्यों पर सम्बन्धित मानचित्र एवं विस्तृत आगणन गठित कर तकनीक दृष्टिकोण से समस्त औपचारिकतायें पूर्ण करते हुए एवं विशिष्टियों का अनुपालन करते हुए प्राविधिक स्वीकृति प्राप्त किया जाना आवश्यक होगा।



- (5) सम्बन्धित कार्यदायी संस्था द्वारा निर्माण कार्य निर्धारित अवधि के अन्दर पूर्ण किया जाना आवश्यक होगा और किसी भी दशा में पुनरीक्षित आगणनों पर स्वीकृति प्रदान नहीं की जायेगी।
- (6) स्वीकृत कार्य कराते समय वित्तीय हस्तपुस्तिका, बजट मैनुअल, स्टोर परचेज रूल्स एवं मितव्ययिता के सम्बन्ध में शासन द्वारा समय-समय पर निर्गत किये गये शासनादेशों का कड़ाई से अनुपाल सुनिश्चित किया जाये। एक मुश्त प्राविधान के विस्तृत आगणन गठित कर लिये जाये और इन पर यदि किस तकनीक अधिकारी के कार्य कराने से पूर्व का अनुमोदन प्राप्त करना नियमानुसार आवश्यक हो तो कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उक्त अनुमोदन अवश्य प्राप्त कर लिया जाये।
- (7) सभी निर्माण कार्य समय-समय पर गुणवत्ता एवं मानकों के सम्बन्ध में निर्गत शासनादेशों के अनुरूप कराये जायेंगे तथा यदि निर्माण कार्य निर्धारित मानकों को पूर्ण नहीं करते हैं तो सम्बन्धित संस्था को अग्रेत्तर धनराशि उक्त मानकों को पूर्ण करने पर निर्गत की जायेगी।
- (8) उक्त स्वीकृत की जा रही धनराशि की प्रतिपूर्ति का प्रस्ताव अविलम्ब भारत सरकार को प्रेषित किया जायेगा।
- (9) कार्य कराने से पूर्व स्थल का भली-भांति निरीक्षण उच्चाधिकारियों द्वारा अवश्य करा लिया जाये एवं निरीक्षण के पश्चात स्थल आवश्यकता एवं प्राप्त निर्देशों के अनुरूप कार्य किया जाये।
- (10) निर्माण कार्य पर प्रयुक्त की जाने वाली सामग्री का नमूना परीक्षण अवश्य करा लिया जाये, तथा उपयुक्त पायी गयी सामग्री का प्रयोग निर्माण कार्य में किया जाये।
- (11) उक्त कार्यों की वित्तीय/भौतिक प्रगति का विवरण राज्य सरकार को एवं उपयोगिता प्रमाण पत्र भारत सरकार एवं शासन को उपलब्ध करा दिया जायेगा।
- (12) कार्यों की समयबद्धता एवं गुणवत्ता हेतु सम्बन्धित विभाग/निर्माण एजेन्सी पूर्ण रूप से उत्तरदायी होंगे। कार्य की समयबद्धता हेतु मेलाधिकारी सम्बन्धित निर्माण एजेन्सी से अनुबन्ध कर उन पर पैनाल्टी क्लोज लगाने पर भी विचार कर सकते हैं।
- (13) आगणन में उल्लिखित दरों को विश्लेषण विभाग द्वारा मुख्य अभियंता द्वारा स्वीकृत/अनुमोदित दरों को पुनः स्वीकृति हेतु अधीक्षण अभियंता का अनुमोदन आवश्यक होगा।
- (14) उपकरणों/सामग्रियों आदि का डी0जी0एस0 एण्ड डी0 की दरों पर अथवा टेण्डर/कोटेशन विषयक नियमों का अनुपालन कराया हुआ किया जायेगा।
- (15) वित्त विभाग के शासनादेश सं0-03-वित्त विभाग/टी0ए0सी0-अनुभाग देहरादून दिनांक 23-10-2003 द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया जाना सुनिश्चित करें।



2. उक्त के सम्बन्ध में होने वाला व्यय वित्तीय वर्ष 2004-05 के आय-व्यय के अंगदान सं०-13-लेखा शीर्षक 2217-शहरी विकास-80-सामान्य-आयोजनागत-800-अन्य-01- केन्द्रीय आयोजनागत/केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजना-01-हरिद्वार कुम्भ मेला हेतु अवस्थापना सुविधा-00-20-सहायक अनुदान/अंशदान/राज्य सहायता के नामे डाला जायेगा।
3. यह आदेश वित्त विभाग के अशा० सं० 805 वि०अनु०-3/2003 दि० 31 जुलाई, 2004 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

भवदीय,

(डा०एस०एस० सन्धू)
सचिव।

संख्या : 3141 (I)/श०वि०/आ०-04 तददिनांक

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. महालेखाकार, लेखा एवं हकदारी (प्रथम), लेखा परीक्षा उत्तरांचल, देहरादून।
2. आयुक्त, गढ़वाल मण्डल, पौड़ी/कैम्प कार्यालय, देहरादून।
3. जिलाधिकारी, हरिद्वार।
4. अधिशासी अभियन्ता, सिंचाई विभाग, हरिद्वार।
5. श्री एल०एम० पन्त, वित्त, बजट अनुभाग।
6. नियोजन प्रकोष्ठ/वित्त अनुभाग-3, उत्तरांचल शासन, देहरादून।
7. निदेशक, एन०आई०सी०, उत्तरांचल सचिवालय।
7. वरिष्ठ कोषाधिकारी, हरिद्वार।
3. निजी सचिव, शा० मुख्यमंत्री, उत्तरांचल शासन।
9. गार्ड बुक।

आज्ञा से,

(डी०के० गुप्ता)
अपर सचिव,